Part-4
Class-XII
Sub – Hindi (Core)

फ़ीचर लेखन /आलेख लेखन

फीचर

फीचर को अंग्रेजी शब्द फीचर के पर्याय के तौर पर फीचर कहा जाता है। हिन्दी में फीचर के लिये रुपक शब्द का प्रयोग किया जाता है लेकिन फीचर के लिये हिन्दी में प्रायः फीचर शब्द का ही प्रयोग होता है। फीचर का सामान्य अर्थ होता है – किसी प्रकरण संबंधी विषय पर प्रकाशित आलेख है। लेकिन यह लेख संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले विवेचनात्मक लेखों की तरह समीक्षात्मक लेख नही होता है। फीचर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली किसी विशेष घटना, व्यक्ति, जीव – जन्तु, तीज – त्योहार, दिन, स्थान, प्रकृति – परिवेश से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित वह विशिष्ट आलेख होता है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। अर्थात फीचर किसी रोचक विषय पर मनोरंजक ढंग से लिखा गया विशिष्ट आलेख होता है। फ़ीचर में आँकड़े, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर व समाचार में अंतर.

1. फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।
2. फ़ीचर-लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी शैली कथात्मक होती है।
3. फ़ीचर-लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।
4. फ़ीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 200 शब्दों से लेकर 250 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।
5. फ़ीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

फ़ीचर के प्रकार

फ़ीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं

1. समाचार फीचर
2. घटनापरक फीचर
3. व्यक्तिपरक फीचर
4. लोकाभिरुचि फ़ीचर
5. सांस्कृतिक फ़ीचर
6. साहित्यिक प्रफीचर
7. विश्लेषण प्रफीचर
8. विज्ञान फ़ीचर।

फीचर-लेखन संबंधी मुख्य बातें

1. फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी होती है।
2. फ़ीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बताना चाहिए।
3. कहानी को बताने का अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करें कि वे घटनाओं को खुद देख और सुन रहे हैं।
4. फ़ीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।

5. फ़ीचर शोध रिपोर्ट नहीं है।
6. इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
7. फ़ीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।
8. फ़ीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।
9. फ़ीचर-लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फ़ॉर्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।
10. फ़ीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।
11. पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

फीचर लेखन की प्रक्रिया

- विषय का चयन
- सामग्री का संकलन
- फीचर योजना

विषय का चयन

किसी भी फीचर की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना रोचक, ज्ञानवर्धक और उत्प्रेरित करने वाला है। इसलिये फीचर का विषय समयानुकूल, प्रासंगिक और समसामयिक होना चाहिये। अर्थात फीचर का विषय ऐसा होना चाहिये जो लोक रुचि का हो, लोक – मानव को छुए, पाठकों में जिज्ञासा जगाये और कोई नई जानकारी दे।

सामग्री का संकलन

फीचर का विषय तय करने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण है विषय संबंधी सामग्री का संकलन। उचित जानकारी और अनुभव के अभाव में किसी विषय पर लिखा गया फीचर उबाऊ हो सकता है। विषय से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों, पत्र – पत्रिकाओं से सामग्री जुटाने के अलावा फीचर लेखक को बहुत सामग्री लोगों से मिलकर, कई स्थानों में जाकर जुटानी पड़ सकती है।

फीचर योजना

फीचर से संबंधित पर्याप्त जानकारी जुटा लेने के बाद फीचर लेखक को फीचर लिखने से पहले फीचर का एक योजनाबद्ध खाका बनाना चाहिये।

फीचर लेखन की संरचना

- विषय प्रतिपादन या भूमिका
- विषय वस्तु की व्याख्या
- निष्कर्ष

विषय प्रतिपादन या भूमिका

फीचर लेखन की संरचना के इस भाग में फीचर के मुख्य भाग में व्याख्यायित करने वाले विषय का संक्षिप्त परिचय या सार दिया जाता है। इस संक्षिप्त परिचय या सार की कई प्रकार से शुरुआत की जा सकती है। किसी प्रसिद्ध कहावत या उक्ति के साथ, विषय के केन्द्रीय पहलू का चित्रात्मक वर्णन करके, घटना की नाटकीय प्रस्तुति करके, विषय से संबंधित कुछ रोचक सवाल पूछकर। भूमिका का आरेभ किसी भी प्रकार से किया जाये इसकी शैली रोचक होनी चाहिये मुख्य विषय का परिचय इस तरह देना चाहिये कि वह पूर्ण भी लगे लेकिन उसमें ऐसा कुछ छूट जाये जिसे जानने के लिये पाठक पूरा फीचर पढ़ने को बाध्य हो जाये।

विषय वस्तु की व्याख्या

फीचर की भूमिका के बाद फीचर के विषय या मूल संवेदना की व्याख्या की जाती है। इस चरण में फीचर के मुख्य विषय के सभी पहलुओं को अलग – अलग व्याख्यायित किया जाना चाहिये। लेकिन सभी पहलुओं की प्रस्तुति में एक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष क्रमबद्धता

होनी चाहिये। फीचर को दिलचस्प बनाने के लिये फीचर में मार्मिकता, कलात्मकता, जिज्ञासा, विश्वसनीयता, उत्तेजना, नाटकीयता आदि का समावेश करना चाहिये।

निष्कर्ष

फीचर संरचना के इस चरण में व्याख्यायित मुख्य विषय की समीक्षा की जाती है। इस भाग में फीचर लेखक अपने विषय को संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत कर पाठकों की समस्त जिज्ञासाओं को समाप्त करते हुये फीचर को समाप्त करता है। साथ ही वह कुछ सवालों को पाठकों के लिये अनुत्तरित भी छोड़ सकता है। और कुछ नये विचार सूत्र पाठकों से सामने रख सकता है जिससे पाठक उन पर विचार करने को बाध्य हो सके।

फीचर संरचना से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण पहलू

शीर्षक

किसी रचना का यह एक जरुरी हिस्सा होता है और यह उसकी मूल संवेदना या उसके मूल विषय का बोध कराता है। फीचर का शीर्षक मनोरंजक और कलात्मक होना चाहिये जिससे वह पाठकों में रोचकता उत्पन्न कर सके।

छायाचित्र

छायाचित्र होने से फीचर की प्रस्तुति कलात्मक हो जाती है जिसका पाठक पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। विषय से संबंधित छायाचित्र देने से विषय और भी मुखर हो उठता है। साथ ही छायाचित्र ऐसा होना चाहिये जो फीचर के विषय को मुखरित करे फीचर को कलात्मक और रोचक बनाये तथा पाठक के भीतर विषय की प्रस्तुति के प्रति विश्वसनीयता बनाये।

उदाहरण

उदाहरणस्वरूप **कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर फीचर दिए जा रहे हैं, इन्हें पढ़कर समझिए।**

1. आदत, जो छूटती नहीं ....

बार-बार एक ही शब्द दोहराने की आदत आपको मुश्किल में भी डाल सकती है। खुद पर विश्वास और दृढ़ निश्चय हो तो आप इससे छुटकारा पाने में सफल हो सकते हैं। तकिया कलाम यानी सखुन तकिया। सोते समय सिर को आराम देने के लिए जैसे तकिया का सहारा लिया जाता है, उसी प्रकार अपने कथन या उक्ति को जोर देने के लिए 'आपकी कृपा ....आपकी कृपा', 'यानी कि ....यानी कि', 'है ना ' है ना' शब्द विशेष का सहारा लिया जाता है।
मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि तकिया कलाम हकलाने या तुतलाने जैसा ही एक रोग है। कुछ लोग निश्चित अवस्था तक सुधर जाते हैं और जो नहीं सुधरते, वे उसके रोगी हो जाते हैं। लंदन के मनोवैज्ञानिक डॉ० बुच मानते हैं कि तकिया कलाम एक प्रकार का इ०सी०ए० है, यानी एक्स्ट्रा केरिक्यूलर एक्शन है। इस इस कुक करता होता हैऔ वाक्टुता बात है तिकया कहामक बेल प्रयोग सायक बाद व बारता करना भी है।

दृढ़ निश्चय से निजात

इस आदत को खुद से दूर करने के लिए आप में दृढ़ निश्चय का भाव होना बेहद जरूरी है। सबसे पहले अपने संवाद को तौलें कि आप कब-कब और किन परिस्थितियों में तकिया कलाम का प्रयोग करते हैं। स्थितियाँ चिहनित कर लेने के बाद आपको तकिया कलाम से बचना है। साथ ही 'कम बोलो-सार्थक बोली' के नियम का अनुसरण भी करना होगा। धीरे-धीरे जब आम बोलचाल में आप तकिया कलाम के इस्तेमाल में कोताही बरतेंगे, तो खुद-ब-खुद आपकी आदत बदल जाएगी। लेकिन सकारात्मक परिणामों के लिए आपका दृढ़-निश्चयी होना बेहद जरूरी है। कोशिश करें, यह इतना मुश्किल भी नहीं, जितना आप समझ रहे हैं।
तकिया कलाम के इस्तेमाल से आपको कई बार विपरीत और हास्यास्पद परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ सकता है, इसलिए बेहतर होगा कि दूसरों के टोकने या खुद मजाक बनने से पहले आप खुद अपने स्वभाव को बदल लें।

2. महानगर की ओर पलायन की समस्या

महानगर सपनों की तरह है। मनुष्य को ऐसा लगता है मानो स्वर्ग वहीं है। हर व्यक्ति ऐसे स्वर्ग की ओर खिचा चला आता है। चमक-दमक, आकाश छूती इमारतें, मनोरंजन आदि सब कुछ पा लेने की चाह में गाँव का सुदामा भी लालायित होकर चल पड़ता है, महानगर की ओर। आज महानगरों में भीड़ बढ़ रही है। हर ट्रेन, बस में आप यह देख सकते हैं। गाँव यहाँ तक कि कस्बे का व्यक्ति भी अपनी दरिद्रता समाप्त करने के ख्वाब लिए महानगरों की तरफ चल पड़ता है।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार के अधिकांश अवसर महानगरों में ही मिलते हैं। इस कारण गाँव व कस्बे से शिक्षित व्यक्ति शहरों की तरफ भाग रहा है। इस भाग-दौड़ में वह अपनों का साथ भी छोड़ने को तैयार हो जाता है। दूसरे, अच्छी चिकित्सा सुविधा, परिवहन के साधन, मनोरंजन के अनेक तरीके, बिजली-पानी की कमी न होना आदि अनेक आकर्षण महानगर की ओर पलायन को बढ़ा रहे हैं, जिससे महानगरों की व्यवस्था चरमराने लगी है।

यहाँ के साधन भी भीड़ के सामने बौने हो जाते हैं। महानगरों का जीवन एक ओर आकर्षित करता है तो दूसरी ओर यह अभिशाप से कम नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह कस्बों व गाँवों के विकास पर भी ध्यान दे। इन क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, रोजगार आदि की सुविधा होने पर महानगरों की ओर पलायन रुक सकता है।

3. जंक फूड की समस्या

भोजन का स्वाद और स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। स्वादिष्ट भोजन देखते ही हमारी लार टपकने लगती है और हम अपने आपको रोक नहीं पाते। कई बार तो हम बिना भूख के भी खाने के लिए उतावले ही बैठते हैं। ऐसी स्थिति आने पर यह समझना चाहिए कि हम जाने-अनजाने व्यसन या भोजन के लालच का शिकार हो रहे हैं। आज इस उपभोक्तावादी युग में चारों ओर वातावरण ऐसा बना दिया गया है कि हम ललचाए बिना रह ही नहीं सकते। दुकानों पर टँगे स्वादिष्ट चटपटे और कुरकुरे व्यंजन तथा खाद्य वस्तुएँ देखकर हमारे मुँह में पानी आना स्वाभाविक ही है। हमारी भूख-प्यास को बढ़ाने में अभिनेत्रियों का योगदान भी कम नहीं है, जब वे यह कहती हुई 'टेढ़ा है पर मेरा है'- कुरकुरे हमारी ओर बढ़ाती प्रतीत होती हैं; इसके अलावा सेवन अप, लिम्का, कोकाकोला आदि विज्ञापन हमें घर के भोजन से दूर करके अपनी ओर आकर्षित करते हैं; पिज्जा, बर्गर, नूडल, चाउमीन आदि के विज्ञापन हमारी भूख बढ़ा देते हैं तो हम उन्हें खरीदने के लिए बाध्य हो जाते हैं। अब तो विज्ञापन में बच्चे भी कहते दिखते हैं-'खाने से डरता है क्या?" यह सुनकर जंक फूड के प्रति हमारी झिझक दूर होती है और हम उनके नफ़े-नुकसान पर विचार किए बिना उनको अपने नाश्ते और भोजन के अलावा समय-असमय खाना शुरू कर देते हैं। जंक फूड के प्रति बच्चों और युवाओं की दीवानगी देखने लायक होती है। आप कहीं भी चले जाइए, चप्पे-चप्पे पर बर्गर, हॉट डॉग, सैंडविच, पैटीज, नूडल्स, कोल्ड ड्रिंक, समोसे, चाउमीन, ढोकले आदि मिल जाएँगे।

इनमें छिपी उच्च कैलोरी की मात्रा बच्चों में मोटापा और आलस्य बढ़ाते हैं। डॉक्टर इन्हें स्वास्थ्य के लिए विष बताते हैं। योगगुरु रामदेव जैसे लोग इनका विरोध करते हैं, पर लोगों की समझ में यह बात आए तब न। मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप हृदयाघात जैसी बीमारियों से यदि बचना है तो जंक फूड से तौबा करना ही पड़ेगा।

स्वयं करें

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में फीचर लिखिए

1. महानगरों में बढ़ते अपराध
2. आज की तनावपूर्ण जीवन-शैली
3. मोबाइल के सुख-दुख
4. नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति

आलेख

किसी एक विषय पर विचार प्रधान एवं गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को 'आलेख' कहा जाता है। आलेख वस्तुत: एक प्रकार के लेख होते हैं जो अधिकतर संपादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित होते हैं। इनका संपादकीय से कोई संबंध नहीं होता। ये लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं, जैसे-खेल, समाज, राजनीति, अर्थ, फिल्म आदि। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य है।

आलेख के मुख्य अंग

आलेख के मुख्य अंग हैं-भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष। सर्वप्रथम, शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लंबी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी चाहिए। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अंत में, विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख रचना के संबंध में प्रमुख बातें

1. लेख लिखने से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।
2. विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।
3. लेख में श्रृंखलाबद्धता होना जरूरी है।
4. लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।
5. लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होनी जरूरी है।
6. विरोधाभास, दोहरापन, असंतुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

आलेख किसे कहते हैं?

उत्तर –

समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में संपादकीय पृष्ठ पर कुछ लेख छपे होते हैं जो समसामयिक घटनाओं पर आधारित होते हैं। उन्हें ही आलेख कहते हैं।

प्रश्न 2:

आलेख किन-किन क्षेत्रों से संबंधित होते हैं?

उत्तर –

आलेख खेल, समाज, राजनीति, अर्थजगत, व्यापार, खेल आदि क्षेत्रों से संबंधित हो सकते हैं।

प्रश्न 3:

अच्छे आलेख के गुण/विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर –

1. अच्छे आलेख में सूचनाओं का होना अनिवार्य होता है जिसमें नवीनता एवं ताजगी हो।
2. विचारों में स्पष्टता तथा भाषा में सरलता, बोधगम्यता तथा रोचकता होनी चाहिए।

प्रश्न 4:

आलेख में किसकी प्रमुखता होती है?

उत्तर –

आलेख में लेखक के विचारों की प्रमुखता होती है। इसी कारण इसे विचार-प्रधान गदय भी कहा जाता है।

प्रश्न 5:

आलेख के मुख्य अंग कौन-कौन-से हैं?

उत्तर –

आलेख के मुख्य अंग हैं-भूमिका, विषय का प्रतिपादन व निष्कर्ष।

प्रश्न 6:

आलेख लिखते समय क्या-क्या तैयारियाँ आवश्यक होती हैं?

उत्तर –

1. आलेख लिखते समय संबंधित विषय से जुड़े आँकड़ों व उदाहरणों का संग्रह करना आवश्यक होता है।
2. लेखन से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना भी आवश्यक होता है।

आलेख के कुछ उदाहरण

1. एक अच्छा स्कूल स्कूल

ऐसी जगह होना चाहिए जहाँ सीखने के लिए उचित माहौल बन सके। स्कूल के बुनियादी ढाँचे के अलावा इसके वैल्यू सिस्टम समेत हमें इसके वातावरण पर फिर से गौर करना होगा। हमें बच्चों को दखलंदाजी से मुक्त और रोचक माहौल देने की आवश्यकता है। हमें ऐसे तत्वों को पहचानकर दूर करना होगा, जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में बाधक हैं। अनुशासन के लिहाज से यही बेहतर है कि ऐसे नियम-कायदों को, जिन्हें बच्चे सजा की तरह समझे, जबरन लादने की बजाय नियमों को तय करने में उनकी भागीदारी भी हो। हमें उन्हें सशक्त बनाना होगा और स्कूली प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

क्लास रूम में लोकतांत्रिक व्यवस्था नजर आए, जहाँ बच्चों के साथ इंटरएक्शन संवादात्मक हो, शिक्षात्मक नहीं; जहाँ सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाए। आपसी संपर्क, संवाद और अनुभव पर आधारित शिक्षा संबंधी प्रविधियाँ अधिक प्रभावशाली होंगी। अवधारणाओं को सिखाने पर ध्यान देना चाहिए।

मेरे विचार से यह बेहद जरूरी है कि हम शिक्षा को व्यापक सामाजिक संदर्भों के हिसाब से देखें। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे अपने ज्ञान को बाहरी दुनिया के साथ जोड़ सकें। ज्ञान वास्तविक अनुभवों से आता है और यदि क्लास रूम के क्रियाकलापों को वास्तविकता से नहीं जोड़ा जाता तो शिक्षा हमारे बच्चों के लिए महज शब्दों और पाठों का खेल ही बनी रहेगी। आज हम एक समाज के तौर पर बेहतर स्थिति में हैं और बदलाव के लिहाज से महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं।

देश में कई स्कूल और संस्थान यह दर्शा रहे हैं कि वस्तुत: हम पुराने तौर-तरीकों से निजात पाकर बेहतर शिक्षा के लिए प्रयास कर सकते हैं। जयपुर का दिगंतर द्वारा संचालित बंध्याली स्कूल, बंगलूरू का सेंटर फ़ॉर लर्निंग या बर्दवान में विक्रमशिला का विद्या स्कूल जैसे कुछ शिक्षालय ऐसी शिक्षा के लिए जाने जाते हैं, जैसी हम चाहते हैं। एकलव्य, दिगंतर और विद्या भवन जैसे सामाजिक संस्थान और आई डिस्कवरी तथा ईजेड विद्या जैसे कुछ सामाजिक उपक्रम पूरे देश में चलाए जा रहे इस सतत आंदोलन का एक हिस्सा हैं। इन सबके प्रभाव मुख्यधारा की स्कूलिंग पर नजर आने लगे हैं।

2. भारतीय कृषि की चुनौती

ऐसे समय में, जब खाद्य पदार्थों की कीमतें आसमान छू रही हैं और दुनिया में भुखमरी अपने पैर पसार रही है, जलवायु-परिवर्तन से संबंधित विशेषज्ञ आगाह कर रहे हैं कि आने वाले वक्त में हमें और भी भयावह स्थिति का सामना करना पड़ेगा। दिनों-दिन बढ़ते वैश्विक तापमान की वजह से भारत की कृषि-क्षमता में लगातार गिरावट आती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक इस क्षमता में 40 फ़ीसदी तक की कमी हो सकती है। (ग्लोबल वार्मिंग एंड एग्रीकल्चर, विलियम क्लाइन)।

कृषि के लिए पानी और ऊर्जा या बिजली दोनों ही बहुत अह तत्व हैं, लेकिन बढ़ते तापमान की वजह से दोनों की उपलब्धता मुश्किल होती जा रही है। तापमान बढ़ने के साथ ही देश के एक बड़े हिस्से में सूखे और जल संकट की समस्या भी बद से बदतर होती जा रही है। एक तरफ वैश्विक तापमान से निपटने के लिए जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल पर ब्रेक लगाने की जरूरत महसूस की जा रही है। वहीं दूसरी ओर कृषि-कार्य के लिए पानी की आपूर्ति के वास्ते बिजली की आवश्यकता भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

खाद्य सुरक्षा, पानी और बिजली के बीच यह संबंध जलवायु-परिवर्तन की वजह से कहीं ज्यादा उभरकर सामने आया है। एक अनुमान के मुताबिक अगले दशक में भारतीय कृषि की बिजली की जरूरत बढ़कर दुगुनी हो जाने की संभावना है। यदि निकट भविष्य में भारत को कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने के समझौते को स्वीकारने के लिए बाध्य होना पड़ता है तो सबसे बड़ा सवाल यही उठेगा कि फिर आखिर भारतीय कृषि की यह माँग कैसे पूरी की जा सकेगी।

5. कॉमनवेल्थ गेम्स

कॉमनवेल्थ गेम्स का सबसे पहला प्रस्ताव दिया था, वर्ष 1891 में ब्रिटिश नागरिक एस्ले कूपर ने। उन्होंने ही एक स्थानीय समाचार-पत्र में इस खेल प्रतियोगिता का प्रारंभिक प्रारूप पेश किया था। इसके अनुसार, यदि कॉमनवेल्थ के सदस्य देश प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर इस तरह की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करें, तो यह उनकी गुडविल तो बढ़ाएगा ही, आपसी एकजुटता में भी खूब इजाफ़ा होगा। फिर क्या था, ब्रिटिश साम्राज्य को कूपर का यह प्रस्ताव बेहद पसंद आया और उसके साथ ही शुरू हो गया खेलों का यह महोत्सव।

पहली बार कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजित करने की कोशिश हुई वर्ष 1911 में। यह अवसर था किंग जॉर्ज पंचम के राज्याभिषेक का। यह एक बड़ा उत्सव था, जिसमें अन्य सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा, इंटर एंपायर चैंपियनशिप भी संपन्न हुई। इसमें ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, साउथ अफ्रीका और यूके की टीमें शामिल हुई थीं। इसमें विजेता टीम थी-कनाडा, जिसे दो फीट और छह इंच की सिल्वर ट्रॉफ़ी से नवाजा गया था। काफी समय तक कॉमनवेल्थ गेम्स के शुरुआती प्रारूप में कोई बदलाव नहीं हुआ।

वर्ष 1928 में जब एम्सटर्डम ओलंपिक आयोजन हुआ तो फिर ब्रिटिश साम्राज्य ने इसे शुरू करने का निर्णय लिया और हैमिल्टन, ओटेरिया, कनाडा में शुरू हुए पहले कॉमनवेल्थ गेम्स। हालाँकि इसका नाम उस समय था ब्रिटिश एंपायर गेम्स। इसमें ग्यारह देशों ने हिस्सा लिया था।

ब्रिटिश एंपायर गेम्स की सफलता कॉमनवेल्थ गेम्स को नियमित बनाने के लिहाज से एक बड़ी प्रेरणा थी। वर्ष 1930 से ही यह प्रत्येक चार वर्षों के अंतराल पर आयोजित होने लगा। वर्ष 1930 से 1950 तक यह ब्रिटिश एंपायर गेम्स के नाम से ही जाना जाता था। फिर वर्ष 1966 से 1974 तक इसे ब्रिटिश कॉमनवेल्थ गेम्स के रूप में जाना जाने लगा। इसके चार वर्ष बाद यानी वर्ष 1978 से यह कॉमनवेल्थ गेम्स बन गया।

6. बढ़ती आबादी-देश की बरबादी

आधुनिक भारत में जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। देश के विभाजन के समय यहाँ लगभग 42 करोड़ आबादी थी, परंतु आज यह एक अरब से अधिक है। हर वर्ष यहाँ एक आस्ट्रेलिया जुड़ रहा है। भारत के मामले में यह स्थिति अधिक भयावह है। यहाँ साधन सीमित हैं। जनसंख्या के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। देश में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। हर वर्ष लाखों पढ़े-लिखे लोग रोजगार की लाइन में बढ़ रहे हैं।
खाद्यान्नों के मामले में उत्पादन बढ़ने के बावजूद देश का एक बड़ा हिस्सा भूखा सोता है। स्वास्थ्य सेवाएँ बुरी तरह चरमरा गई हैं। यातायात के साधन भी बोझ ढो रहे हैं। कितनी ही ट्रेनें चलाई जाएँ या बसों की संख्या बढ़ाई जाए, हर जगह भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। आवास की कमी हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने फुटपाथों व खाली जगह पर कब्जे कर लिए हैं। आने वाले समय में यह स्थिति और बिगड़ेगी।
जनसंख्या बढ़ने से देश में अपराध भी बढ़ रहे हैं क्योंकि जीवन-निर्वाह में सफल न होने पर युवा अपराधियों के हाथों का खिलौना बन रहे हैं। देश के विकास के कितने ही दावे किए जाएँ, सच्चाई यह है कि आम लोगों का जीवन-स्तर बेहद गिरा हुआ है। आबादी को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए। सरकार को भी सख्त कानून बनाने होंगे तथा आम व्यक्ति को भी इस दिशा में स्वयं पहल करनी होगी। यदि जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं किया गया तो हम कभी भी विकसित देशों की श्रेणी में नहीं खड़े हो पाएँगे।

7. अॉखों-देखा जल-प्रलय

प्रकृति का सौंदर्य जितना मोहक होता है, उसका विनाशकारी रूप उतना ही भयावह होता है। प्रकृति जब कृद्ध होती है तो वह कई रूपों में बदला लेती है। इन्हीं में से एक है जल प्रलय। प्रकृति का यह रूप गतवर्ष जम्मू-कश्मीर में आई बाढ़ के रूप में देखने को मिला, जिससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ।
आकाश से गिरती वर्षा की जो बूंदें तन-मन को शीतलता पहुँचा रही थीं, और मौसम को सुहावना बना रही थीं, उन्हीं बूंदों ने जब वर्षा का रूप ले लिया और कई घंटे तक अपने अविरल रूप में बरसती रहीं तो मन में शंकाएँ पनपना स्वाभाविक था। देखते-ही-देखते वर्षा का पानी नालियों की सीमा लाँघकर सड़कों पर जमा होने लगा।
हरे-भरे मैदान पानी में डूबने लगे। देखते-ही-देखते पानी घरों और दुकानों में घुसने लगा। अब लोगों के चेहरे पर भय और चिंता की रेखाएँ स्पष्ट दिखने लगी थीं। वे अपना सामान बाँधने और सुरक्षित स्थान पर जाने की तैयारी करने लगे। इधर वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। लोगों की कठिनाई कम होने का नाम नहीं ले रही थी। वे अपना सामान उठाए कमर भर पानी भरे रास्ते से सुरक्षित स्थान की ओर जाने लगे। बाढ़ अपना कहर ढाने पर तुली थी। लगता था इस जल-प्रलय में सब कुछ डूब जाएगा। हमारे होटल के कमरे की एक मंजिल पानी में डूब चुकी थी। तीसरे दिन जब बरसात पूरी तरह रुकी तब लोगों की जान में जान आई। अब तक राहत एजेंसियों और सेना बचाव कार्य में जुट चुकी थीं। हेलीकॉप्टरों द्वारा भोजन और अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ लोगों तक पहुँचाकर उनके घाव पर मरहम लगाने का कार्य किया जा रहा था। इस जल-प्रलय की छवि मेरे मनोमस्तिष्क पर अब भी अंकित है।

स्वयं करें

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए
   (क) **समय का महत्व**
   (ख) फ़िल्मों में हिंसा
   (ग) **विज्ञापनों की लुभावनी दुनिया**